**PROF. (DR) RUKHSANA PARVEEN**

**HOD, DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY**

**R.R.S COLLEGE MOKAMA**

CLASS – BA PART- III (H), PAPER - V

# ATTITUDE

वस्तुत: मनोवृत्ति किसी व्यक्ति की मानसिक तस्वीर या प्रतिच्छाया है जिसके आधार पर वह व्यक्ति, समूह, वस्तु, परिस्थिति या फिर किसा घटना के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल दृष्टिकोण अथवा विचार को प्रकट करता है। मनोवृत्ति का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर दिशासूचक रूप से पड़ता है। मनोवृत्ति व्यक्ति की शक्ति को एक खास दिशा में लगा देती है, जिसके कारण वह अन्य दिशाओं को छोड़कर एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने लगता है। जैसा कि इसको परिभाषा से स्पष्ट है- मनोवृत्ति सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। अगर व्यक्ति की मनोवृत्ति सकारात्मक है तो उसकी प्रतिक्रिया भी अनुकूल होगी, परन्तु अगर मनोवृत्ति नकारात्मक है तो प्रतिक्रिया अनुकूल नहीं बल्कि प्रतिकूल होगी।

अर्थात् व्यक्ति की मनोवृत्ति तथा उसके व्यवहार के बीच सदा सम्बद्धता होती है। दूसरे शब्दों में, अगर एक व्यक्ति की मनोवृत्ति अपने काम अथवा संगठन (जिसका वह सदस्य है) के प्रति सकारात्मक है तो उससे इस बात की उम्मीद की जा सकती है कि वह अपने संगठन के प्रति अपना महत्तम योगदान देगा।

मनोवृत्ति के तीन महत्वपूर्ण घटक हैं। ये हैं-

1. संज्ञानात्मक संघटक (Cognitive Component)
2. भावात्मक संघटक (Affective Component)
3. व्यवहारात्मक संघटक (Behavioural Component)

## संज्ञानात्मक संघटक (Cognitive Component)

- किसी वस्त से संबंधित व्यक्ति के विचार और विश्वासों को संज्ञाना कहते हैं।
- अर्थात् किसी वस्तु के बारे में उपलब्ध सूचना के आधार पर ही इस बारे में अपनी धारणा बनाते हैं या फिर कोई निर्णय देते हैं।
- इसी आधार पर उस वस्तु के बारे में हमारी मनोवृत्ति सकारात्मक या नकारात्मक होती है। मनोवृत्ति का यही संघटक संज्ञानात्मक कहलाता है।

**उदाहरण**

अगर हम किसी व्यक्ति के प्रति यह विश्वास रखते हैं कि वह असभ्य है तो इसका अर्थ यह है कि हम उसे एक असभ्य मनुष्य के रूप में देखते हैं। उस व्यक्ति के प्रति हमारे इसी विश्वास को संज्ञानात्मक घटक कहा जाएगा।

## भावात्मक संघटक (Affective Component)

- यह संघटक मनोवृत्ति परिवर्तन, निर्णयन, सामाजिक प्रभाव तथा प्रत्यायन (Persuasion) सभी में समान रूप से पाया जाता है।
- भावात्मक संघटक का तात्पर्य किसी मनोवृत्ति वस्तु (attitude object) के प्रति व्यक्ति के भाव अथवा पसंद या नापसंद तथा सहानुभूति आदि से है।
- भावात्मक संघटक वास्तव में मनोवृत्ति का सारभाग (Core) होता है तथा अन्य संघटक सिर्फ सहायक की भूमिका में होते हैं।

## व्यवहारात्मक संघटक (Behavioural Component)

- किसी वस्तु के प्रति व्यवहार या क्रिया करने की तत्परता को व्यवहारात्मक संघटक कहते हैं।
- यह क्रियात्मक संघटक के नाम से भी जाना जाता है।
- क्रियात्मक संघटक का तात्पर्य किसी मनोवृत्ति-वस्तु के प्रति व्यक्ति की क्रिया प्रवृत्ति से है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति किसी मनोवृत्ति-वस्तु के प्रति कैसा व्यवहार करता है।

**उदाहरण**
अगर एक व्यक्ति को यह विश्वास है जिस संस्था में वह कार्यरत है वहां का मालिक भ्रष्ट है तथा संस्था के पैसों का दुरुपयोग कर रहा है तो ऐसे में हो सकता है अपने मालिक के प्रति वह वैसा व्यवहार न करे जैसा कि उससे उम्मीद की जाती है या फिर यह भी हो सकता है कि वह अपनी नौकरी ही छोड़ दे।

### मनोवृत्ति को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है –

1. व्यक्त (प्रत्यक्ष) – सजगता का परिणाम
2. अंतर्निहित (अप्रत्यक्ष) – अचेतन मन में निहित

दोनों में मौलिक अन्तर यह है कि जहां मनुष्य व्यक्त (प्रत्यक्ष) मनोवृत्ति के निर्माण के प्रति सजग रहता है अर्थात् उसे अपनी मनोवृत्ति का ज्ञान रहता है वहीं अंतर्निहित अर्थात् अप्रत्यक्ष मनोवृत्ति के प्रति वह सचेत नहीं रहता बल्कि भूतकाल की यादें इस मनोवृत्ति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

## नैतिक मनोवृत्ति (अभिवृत्ति) (Moral Attitude)

- नैतिक प्रवृत्तियां प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार में परिलक्षित होती हैं।
- यहां प्रवृत्तियों के नैतिक होने का अर्थ है किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में नैतिक निर्णय देना अर्थात् मूल्यांकन करना कि वह उचित है या अनुचित।

**उदाहरण**
वर्तमान विश्व में कई राष्ट्र हैं और इन राष्ट्रों के बारे में अच्छा या बुरा कहने मात्र से भी किसी व्यक्ति के नैतिक मनोवृत्ति का पता चलता है यानी उसके इस प्रकार के वक्तव्य से विश्व के प्रति उसकी मनोवृत्ति तथा मूल्यों में उसकी आस्था का पता चलता है।

## नैतिक मनोवृत्ति तथा मूल्यों का संस्कृति से संबंध

प्रत्येक संस्कृति का अपना-अपना सांस्कृतिक प्रतिरूप होता है। उसके अपने-अपने मूल्य, मानदंड तथा परंपराएं होती हैं। अत: किसी संस्कृति के सदस्यों की मनोवृत्ति के निर्माण पर उसके सांस्कृतिक प्रतिरूपों का भी प्रभाव पड़ता है। इसी कारण जहां एक संस्कृति के लोगों की मनोवृत्ति में अधिक समानता पाई जाती है, वहां भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के लोगों की मनोवृत्ति में अधिक भिन्नता।

नैतिक मूल्य सभी प्राकृतिक मूल्यों में सर्वश्रेष्ठ है – अच्छाई, पवित्रता, सत्यवादिता, विनम्रता। ये नैतिक मूल्य, बुद्धिमत्ता, मेधाविता, खुशी, शक्ति-संपन्नता, प्राकृतिक सन्दरता अथवा कला या फिर किसी राज्य में व्याप्त शक्ति एवं स्थायित्व आदि मूल्यों से कहीं अधिक उच्चतर स्थान रखते हैं।

वैसे तो सांस्कृतिक मूल्य अनेक हैं दया, करुणा, दानशीलता, नि:स्वार्थ प्रेम जैसे नैतिक मूल्यों की बात ही अलग है। ये अन्य नैतिक मूल्यों की अपेक्षा चिरस्थायी हैं तथा ज्यादा सार्थक भी।

## राजनीतिक मनोवृत्ति (अभिवृत्ति) (Political Attitude)

जैसा कि पिछली चर्चाओं में भी कहा गया है- विशिष्ट वस्तुओं के प्रति विशेष रूप से व्यवहार करने की प्रवृत्ति (झुकाव) को मनोवृत्ति कहते हैं। जहां तक राजनीतिक मनोवृत्ति का प्रश्न है, यहां मनोवृत्ति वस्तु (Attitude-object) राजनीति से जुड़े होते हैं, जैसे कि राजनीतिक उम्मीदवार, राजनीतिक मुद्दे, राजनीतिक दल अथवा राजनीतिक संस्थाएं आदि ।

## राजनीतिक मनोवृत्ति और व्यक्तित्व के शीलगुण (Political Attitude & Personality Traits)

व्यक्तित्व के कुछ ऐसे शीलगुण (Traits) हैं जिनका राजनीतिक मनोवृत्ति पर स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है। ऐसे पांच शीलगुणों (Traits) की पहचान की गई है जिनकी चर्चा नीचे की जा रही है ।

### बहिर्मुखता (Extroversion)

- इसका अर्थ है ऊर्जावान, कर्मठ तथा क्रियाशील होना। जिन व्यक्तियों में यह शीलगुण पाया जाता है वे समाज तथा देश-दुनिया के प्रति अधिक सजग तथा क्रियाशील होते हैं।
- बहिर्मुखी व्यक्ति वह है जिसमें सामाजिकता, आधिपत्य, सहकारिता, प्रतियोगिता आदि शीलगुण पाए जाते हैं।
- इनमें किसी विषय पर निर्णय लेने तथा उसे कार्यान्वित करने की क्षमता भी अधिक होती है। ये स्वभावत: व्यवहार कुशल, सामाजिक एवं मिलनसार होते हैं।

### सत्यागशीलता (Agreeableness)

- यह व्यक्तित्व का प्रमुख शीलगुण है जो सामाजिक तथा साम्प्रदायिक मनोवृत्ति से बिल्कुल भिन्न होता है।
- इस शीलगुण से युक्त व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी ईमानदार बना रहता है। ऐसे व्यक्तियों में परोपकारिता, विनम्रता जैसी भावना होती है।
- कई बार इनके व्यवहार से मानसिक अपरिपक्वता भी झलकती है अर्थात् ये संवेदनशील भी होते हैं।

निष्ठता (Conscientiousness)

- इस शलिगुण से युक्त व्यक्ति लक्ष्य प्रधान होते हैं। इन्हें स्वयं पर नियंत्रण होता है।
- ऐसे शीलगुण वाले व्यक्ति नियमों व मान्यताओं के पालन में विश्वास रखते हैं।
- ये अपनी प्राथमिकताओं को समझते हैं और उसी के अनुसार एक व्यवस्थित योजना पर कार्य करते हैं।

संवेगात्मक स्थिरता (Emotional Stability)

ऐसे शीलगुण वाले व्यक्ति संवेगात्मक रूप में परिपक्व होते हैं। जिस व्यक्ति का व्यक्तित्व विकास सामान्य एवं संतुलित होता है उसमें संवेगात्मक स्थिरता रहती है। ये परिस्थिति को समझकर उसके अनुकूल प्रतिक्रिया करते हैं। इनमें नकारात्मक प्रवृत्ति अर्थात् चिन्ता, उदासी, क्रोध या तनाव आदि अनावश्यक रूप से नहीं पाया जाता जैसा कि संवेगात्मक रूप से अस्थिर व्यक्तित्व में देखने को मिलता है।

खुलापन तथा अनुभव के प्रति उन्मुखता (Openness to Experience)

ऐसे व्यक्ति महत्वाकांक्षी होते हैं। ये संकीर्ण सोच वाले व्यक्तियों से भिन्न होते हैं। खुले दिमाग तथा अनुभवों के प्रति उत्सुक शीलगुण वाले व्यक्ति में स्वाभाविकता होती है। ये गहन विचारशील तथा उच्च आकांक्षा स्तर वाले व्यक्ति होते हैं। इनका मानसिक क्षितिज विकसित किन्तु थोड़ा जटिल भी हो सकता है। | उपर्युक्त शीलगुणों में बहिर्मुखता को छोड़कर बाकी सभी शीलगुण हमारे अर्थ संबंधी आदर्शों पर काफी कुछ प्रभाव डाल सकते हैं। मारा सामाजिक आदर्श भी इनसे प्रभावित हो सकता है। जहां तक अर्थ संबंधी आदर्शों का प्रश्न है तो कोई मुक्त बाजार व्यवस्था को पसंद कर सकता है या फिर कुछ लोग हस्तक्षेप – सिद्धान्त की वालत कर सकते हैं। इसी प्रकार समाज के संदर्भ में कोई परम्पराओं को ज्यादा तरजीह देने वाला होता है तो कोई व्यक्तिगत स्वतंत्रता को ज्यादा महत्व देता है या फिर सामाजिक समानता व असमानता के बारे में अलग-अलग विचार प्रकट कर सकता है। बहिर्मुखता ही वह शीलगुण है जो हमारे आदर्शों को नहीं बल्कि राजनीति में हमारी भागीदारी को प्रभावित कर सकता है।

## मनोवृत्ति (अभिवृत्ति) के कार्य (Functions of Attitude)

मनोवृत्ति द्वारा कुछ कार्य संपन्न किए जाते हैं और इन्हीं कार्यों के विश्लेषण से मनोवृत्तियों की बेहतर पहचान की जा सकती है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ खास
मनोवृत्तियों को तरजीह देता है।
मनोवृत्ति के प्रमुख कार्य (वृत्तियां) ये हैं:

## उपयोगितावादी/साधनात्मक कार्य (Utilitarian/Instrumental Functions)

साधनात्मक कार्य का अर्थ यह है कि जिस व्यवहार से व्यक्ति को लाभ या पुरस्कार मिलता है या फिर मिलने की। संभावना रहती है, वह उसे बार-बार करने की कोशिश करता है लेकिन जिस व्यवहार से दण्ड मिलता । है या फिर मिलने की संभावना भी होती है वह वैसे कार्य करने से परहेज करता है। यहां काज के कहने का अभिप्राय यह है कि जिन वस्तुओं अथवा व्यक्तियों से हमें पुरस्कार मिलता है या मिलने की संभावना होती है उनके प्रति हमारी मनोवृत्ति सकारात्मक होती है। दूसरी ओर, वैसे व्यक्ति या कार्य जिनसे हमें नुकसान का डर होता है उनके प्रति हमारी

मनोवृत्ति सकारात्मक नहीं बल्कि नकारात्मक बन जाती है। अत: यहां मनोवृत्ति का मुख्य कार्य यह है कि वह पुरस्कार पाने या दण्ड से बचने के एक साधन के रूप में काम करती है।

## ज्ञान कार्य (Knowledge Question)

मनोवृत्ति का ज्ञान से संबंधित कार्य भी महत्वपूर्ण है। हममें से प्रत्येक को अर्थपूर्ण, स्पष्ट तथा सार्थक ज्ञान की आवश्यकता होती है ताकि हम व्यावहारिक जीवन में समाज तथा देश-दुनिया के बारे में एक बेहतर समझ बना सके तथा उनसे सामंजस्य भी
स्थापित कर सके। हमारी इस आवश्यकता को पूरा करने में मनोवृत्ति भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका । निभाती है। अगर मनोवृत्ति अनुकूल हो तो ऐसी स्थिति में गान में वृद्धि होने की गुंजाइश रहती है जबकितिकूल होने पर ज्ञानवर्धन की गुंजाइश नहीं रहती। किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना के प्रति नोवृात रखने से व्यक्ति के अनुभवों में वृद्धि होती है क्योंकि उसमें जानने की प्रवृत्ति विकसित होती है।

## अह रक्षात्मक कार्य (Ego-Defensive Function)

मनोवृत्ति का एक महत्वपूर्ण कार्य है। चिन्ता, निराशा तथा द्वन्द्व से व्यक्ति की रक्षा करना। अपने अहं रक्षा के लिए व्यक्ति कई बार अपनी वर्तमान मनोवृत्ति को बदल लेता है अर्थात् नई मनोवृत्ति विकसित कर लेता है और स्वयं के बारे में सत्य सुनने या जानने की उसमें क्षमता आ जाती है। वह जीवन के कटू सत्यों को भी आसानी से स्वीकार कर लेता है। इसे युक्त्याभास (Rationalization) भी कहते हैं।

## मूल्य अभिव्यंजक कार्य (Value Expressive Function)

मनोवृत्ति का एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी है कि व्यक्ति इसके माध्यम से स्वयं को बेहतर तरीके से समझ पाता है। दूसरे शब्दों में, मनोवृत्ति का कार्य यह भी है कि व्यक्ति अपने व्यक्तिगत मूल्य के अनुकूल अपनी मनोवृत्ति में बदलाव लाता है। तो उसे संतुष्टि मिलती है। अर्थात् मनोवृत्ति व्यक्ति को अपने मूल्य के अनुकूल व्यवहार करने को प्रेरित । करती है और व्यक्ति स्वयं को दूसरों के समक्ष मूल्यों में अपनी व्यक्तिगत आस्था को बेहतर ढंग से । अभिव्यजित कर पाता है।

## मूल्य अभिव्यंजक कार्य (Value Expressive Function)

सामाजिक पहचान कार्य का अर्थ यह है कि मनोवृत्ति के माध्यम से व्यक्ति को सामाजिक तौर पर एक पहचान भी मिलती है। यहां किसी व्यक्ति की मनोवृत्ति उसके बारे में दूसरों को सूचना संप्रेषित करने का कार्य करती है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अगर गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत का तिरंगा झंडा खरीदता है तो यह संभव है। कि उसने समाज में अपनी पहचान बनाने के उद्देश्य से ऐसा किया हो।